श्री कर्मदहन विधान

रचयिता

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री कर्मदहन विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	25/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

श्रीमान् जिनेन्द्रकुमार-श्रीमती सुषमा जैन
सौरभ-श्रीमती मोरवी जैन, ग्रंथ जैन
श्रीमती शिखा-आशीष जैन, काव्यांश
श्रीमती शिल्पा-शशांक जैन, मानविक
एवं समस्त विद्यायतन स्कूल परिवार बीना, सागर (म.प्र.)

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

यह जीव अष्ट कर्मों के कारण संसार में चारों गतियों में परिभ्रमण कर रहा है एवं सुख दुख की अनुभूति करता है। इस संसार परिभ्रमण के चक्कर से छूटने के लिए एवं अनंत सुख को पाने के लिए कर्मों को दहन करना आवश्यक है इस कर्म निर्जरा के लिए तप एवं साधना का मार्ग ही है। अनंत सिद्ध परमात्माओं ने तप और ध्यान के माध्यम से इन कर्मों की निर्जरा करके अनंत सुख को प्राप्त किया है। भगवान् की भक्ति भी कर्म निर्जरा का एक माध्यम है।

ऐसी ही भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'श्री कर्मदहन विधान'** की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा॰ ब्र॰ संजय, मुरैना

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य

(दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फु हार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...॥

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥

हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...॥

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

सप्तर्षि का अर्घ्य

(दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...॥

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य

(शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...॥

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बन्धोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइ-सेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्क ाणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

(जोगीरासा)

कर्मों का सिद्धान्त निराला, सारी दुनियाँ माने।
जैन धर्म में इसकी व्याख्या, अद्वितीय पहचाने॥
तीन लोक में तीन काल में, सब कुछ कर्म कराएँ।
कर्म विजेता सिद्ध प्रभु को, हम तो शीश झुकाएँ॥१॥ ओम्...
इस धरती से उस अम्बर तक, जो नजरों में आता।
चारों गतियाँ सभी योनियाँ, जो संसार प्रदाता॥
सब कर्मों की बलिहारी है, सुख दुख रूप नचाएँ।
कर्मों का सिद्धान्त समझकर, इन पर जय जो चाहें॥२॥ ओम्...
मुनि बनकर अरिहंत बनें वे, कर्म दहन फिर करते।
सिद्धचक्र में शामिल होके, मोक्षमहल में रहते॥
कर्म दहन का विधान करके, कर्म दहन हम चाहें।
सिद्धचक्र को करके नमोऽस्तु, सारे कर्म नशाएँ॥३॥ ओम्...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
कर्मदहन को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥४॥ ओम्..

(पुष्पांजलिं...)

श्री कर्मदहन विधान

स्थापना (सखी)

जो चिदानन्द सिद्धातम, सर्वोच्च पूज्य अविनाशी।
वो ज्ञानशरीरी निर्मल, हैं लोकशिखर के वासी॥
चैतन्य शुद्ध अब करने, पूजें सब सिद्ध जिनों को।
हो कृपा सिद्धप्रभु की तो, हम नाशें भव भ्रमणों को॥

(दोहा)

देह प्राप्त कर देह से, पाए देहातीत।
उन सिद्धों के चरण में, वन्दन हो अगणीत॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट्...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल जैसा कंचन आतम, सब सिद्ध प्रभु जी पाए।
तज रागद्वेष मिथ्यामल, पुद्गल के बंध नशाए॥
अब जन्म-मरण के बंधन, अपने सम दूर करा दो।
हम जल से करते वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

तज मोह-ताप की लपटें, निज की शीतलता पाई।
अध्यात्म-सदन में रमके, निज आत्म-विभूति बचाई॥
संयोग-वियोग की ज्वाला, अपने सम दूर करा दो।
चंदन से करते वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जब छूटे झूठे आश्रय, तब अन्तर्लीन हुए हो।
तज आधि-व्याधि-उपाधि, चित् खण्ड-अखण्ड छुए हो॥

अब नाथ हमारी भटकन, अपने सम दूर करा दो।
ले पुंज करें हम वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं...।

चारित्र-गंध से चेतन, हे नाथ आपकी महकी।
तो चेतन सौन-चिरैया, चैतन्य बाग में चहकी॥
अब काम-शिकारी का भय, अपने सम दूर करा दो।
ले पुष्प करें हम वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जब ज्ञानामृत सुख रस का, अन्तर से झरना झरता।
फिर उसे न दुनियाँ रुचती, वह भोग स्वयं का करता॥
अब क्षुधा-रोग की पीड़ा, अपने सम दूर करा दो।
नैवेद्य करें हम अर्पण, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

खलु चिच्चदेव की ज्योति, जो अन्धकार को खा ले।
वह दिखे जले न बाहर, चैतन्य सदन प्रकटा ले॥
अब मोह अमावस काली, अपने सम दूर करा दो।
हम करें आरती वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

जब महका निज-सौरभ तो, हर कर्म-कली मुरझाई।
चित्-चमत्कार देखा तो, फिर मुक्तिरमा शर्माई॥
जड़-चेतन का मिश्रण अब, अपने सम दूर करा दो।
हम करें धूप से वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

जो खोज चुका हो दुर्लभ, अनुपम निज-रूप सुहाना।
वो यहाँ-वहाँ क्यों भटके, जो पाए मोक्ष ठिकाना॥
संकल्प-विकल्प सभी अब, अपने सम दूर करा दो।
फल अर्पित करें नमन हम, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज-नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह-नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

चिदानन्द चिद्रूप हैं, चित् चैतन्य विलास।
जिनके गुण गण में बसे, भक्तों का संन्यास ॥

(सखी)

जो स्वयं सिद्ध हैं जग में, जो सिद्ध धाम के स्वामी।
चैतन्य निलय के वासी, जिन्हें बारम्बार नमामि॥१॥
सब कर्म-समूह नशा के, सुन्दर आतम जो पाए।
वह अनुपम स्वरूप पाने, हम गुण गाने ललचाए॥२॥
जब सिद्ध दशा मिलती तो, नहिं अभाव हो आतम का।
नहिं नष्ट ज्ञान दर्शन हो, यह मत है जिनशासन का॥३॥
जो त्याग-तपस्या करके, निज-पर का मंगल करके।
जब कर्मपटल सब हरते, तो प्राप्त आठ गुण करके॥४॥
झट सिद्धालय में वस के, भोगें वो अनन्तसुख को।
हे सुख सम्पन्न जिनेश्वर, हम खोजें बस उस सुख को॥५॥

वह सुख उत्पन्न स्वयं से, जो निरुपम है बिन बाधा।
प्रतिपक्ष रहित अविनाशी, ना कम होता ना ज्यादा॥६॥
वह भोग विषय में न होता, वह रहता अचल सदा जो।
सिद्धों ने जिनको भोगा, हमको भी वही चखा दो॥७॥
जब श्रमण बने तो तुमने, श्रम निद्रा पूर्ण मिटाई।
तब कोमल आसन शय्या, क्या काम तुम्हारे आई॥८॥
ऐसी वह सिद्ध अवस्था, जो परम सुहानी पाई।
बस उसको पाने हमने, यह पूजन आज रचाई॥९॥
पूजन का यही प्रयोजन, हो नमन सभी सिद्धों को।
हो रहे हुए होंगे जो, यशवान पूज्य सिद्धों को॥१०॥
नित तीनों संध्याओं में, हम करते उन्हें नमोऽस्तु।
वह सिद्ध दशा बस पाएँ, 'सुव्रत' की जो प्रिय वस्तु॥११॥

(दोहा)

सिद्ध भक्ति निर्दोष जो, करे नमन वा ध्यान।
सिद्धों जैसा शीघ्र वह, सुखी बने भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अनन्त सिद्ध स्वामी करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, अनन्त सिद्ध जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रथम वलय अर्घ्यावली

ज्ञानावरणीय कर्म कम ५ भेद

(हाकलिका)

मतिज्ञान को जो ढाकें, मतिज्ञानावरणी नाशें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

जो श्रुतज्ञान न दे रहने, श्रुतज्ञानावरणी हरने।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

अवधिज्ञान को प्रकट करें, अवधिज्ञानावरण हरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

ज्ञान मनःपर्यय पा लें, उसका आवरणी हर लें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

केवलज्ञान प्रकट कर लें, केवलज्ञानावरण हरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय वा, केवल-ज्ञानावरण हरें।
जेल खेल के कर्मों के हर के, सिद्ध दशा हम ग्रहण करें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं सकलज्ञानावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

द्वितीय वलय अर्घ्यावली

दर्शनावरणीय के ९ भेद

(हाकलिका)

चक्षुदर्शनावरण हरें, ज्ञान चक्षु को प्रकट करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं चक्षु दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

अचक्षुदर्शनावरण हरें, आत्मचक्षु को प्रकट करें॥
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं अचक्षु दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

अवधिदर्शनावरण हरें, धर्मचक्षु अध्यात्म करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं अवधि दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

केवलदर्शनावरण जी, दूर करें बनने ज्ञानी।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं केवल दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

निद्रा कर्म नशा डालें, चेतन को प्रकटा डालें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं निद्रा दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

निद्रा-निद्रा कर्म हरें, हम अपना निर्वाण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं निद्रा-निद्रा दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

प्रचला निद्रा को नाशें, सिद्ध शहर में हम वासें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं प्रचला दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

प्रचला-प्रचला हरना हैं, जीवन उजला करना है।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं प्रचला-प्रचला दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

हम स्त्यानगृद्धि हर लें, अपनी ऋद्धि-सिद्धि कर लें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि दर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

चक्षु अचक्षु अवधि केवल, निद्रा निद्रा-निद्रा भी।
प्रचला प्रचला-प्रचला हर लें, हर लें हम स्त्यानगृद्धि॥
नौ-नौ ये दर्शन आवरणी, भगवन जैसे भक्त हरें।
जेल खेल के कर्मों के हर के, सिद्ध दशा हम ग्रहण करें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥
ॐ ह्रीं सकलदर्शनावरणीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

तृतीय वलय अर्घ्यावली

वेदनीय कर्म के २ भेद

(हाकलिका)

हरें असाता दुःख दाता, पाएँ शाश्वत सुख-साता।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं असाता वेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

हर लें सुख दाता साता, पाएँ आतम का नाता॥
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं साता वेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

साता और असाता वाला, वेदनीय का हरण करें।
जेल खेल के कर्मों के हर के, सिद्ध दशा हम ग्रहण करें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं सकल वेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

चतुर्थ वलय

मोहनीयकर्म के २८ भेद

(चौपाई)

क्रोध अनंतानुबंधी को, तजें अनंत पाप बंधी को।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अनंतानुबंधीक्रोधरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

मान अनंतानुबंधी को, तजें मान की पाबंदी को।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अनंतानुबंधीमानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

माया अनंतानुबंधी को, तजें पाप की हर ग्रंथी को।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अनंतानुबंधीमायारहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

लोभ अनंतानुबंधी को, तजें लोभ प्रकृति गंदी को।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अनंतानुबंधीलोभरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

तजें क्रोध अप्रत्याख्यानम्, पाएँ सम्यक् दर्शन को हम।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अप्रत्याख्यानक्रोधरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

तजें मान अप्रत्याख्यानम्, धर्म मिले अब मार्दव उत्तम।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अप्रत्याख्यानमानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥
तज माया अप्रत्याख्यानम्, सरल बनें हम बनकर उत्तम।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अप्रत्याख्यानमायारहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥
तजें लोभ अप्रत्याख्यानम्, शुद्ध बने पानें शुद्धातम।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अप्रत्याख्यानलोभरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥
प्रत्याख्यान क्रोध को त्यागें, संयम पद से हम अनुरागें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म प्रत्याख्यानक्रोधरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥
प्रत्याख्यान मान को छोड़ें, महा व्रतों से नाता जोड़ें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म प्रत्याख्यानमानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥
त्यागें प्रत्याख्यानी माया, रत्नत्रय की पाएँ छाया।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म प्रत्याख्यानमायारहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥
प्रत्याख्यान लोभ परिहारें,अपना आतम रूप निखारें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म प्रत्याख्यानलोभरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥
तजें क्रोध संज्वलन विभावी, यथाख्यात हम बनें स्वभावी।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म संज्वलनक्रोधरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

तजें मान संज्वलन विकारी, पाएँ हम सर्वज्ञ सवारी।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म संज्वलनमानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥
तज माया संज्वलन हमेशा, बनें बनें अरहंत जिनेशा ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म संज्वलनमायारहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥
तजें लोभ संज्वलन अशुद्धि, सिद्धों जैसी मिले विशुद्धि।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म संज्वलनलोभरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥
हास्य कर्म को पूरा छोड़ें, पापों का पथ अपना मोड़ें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म हास्यरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥
मोह पाप रति राग पछाड़ें,कर्म शत्रु सो नहीं दहाड़ें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म रतिरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥
विद्वेष अरति की ज्वाला, मुक्तिवधू की हो वरमाला।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म अरतिरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥
शोक लोग का दल दल त्यागें, खुशियों के सूरज से जागें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म शोकरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥
सात तरह के भय को त्यागें, निर्भयता के पीछे भागें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म भयरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

तजें जुगुप्सा ग्लानी हानि,जल्दी त्यागें कर्म कहानी।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म जुगुप्सारहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥
स्त्री वेद वेदना तजलें, आतम परमातम को भजलें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म स्त्री वेदरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥
पुरुष वेद की पीड़ा नाशें, वेदातीत अवस्था वासें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म पुरुष वेदरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥
वेद नपुंसक तज ले ज्ञानी,हम बन जाए आतम ध्यानी।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म नपुंसक वेदरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥
मिथ्या कर्म त्याग ले प्यारे, ज्ञानी सम्यक् दर्शन पा रे।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म मिथ्यात्वरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥
सम्यक्मिथ्या मिश्रण त्यागें, शुद्ध चेतना में अनुरागें।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म सम्यक्मिथ्यात्वरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥
सम्यक् प्रकृति को भी तज ले , क्षायिक गुण पाले रे पगले।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, कर्म दहन कर करें जयोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म सम्यक्प्रकृतिरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

सुनो! अनंतानुबंधी वा, अप्रत्याख्यानम् आदि।
क्रोध मान माया लोभों की, सोलह नौ-नौ हास्यादि॥

मिथ्या आदि मोहिनीय की, कुल-कुल अट्ठाबीस हरें।
जेल खेल के कर्मों के हर के, सिद्ध दशा हम ग्रहण करें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं सकल मोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

पंचम वलय अर्घ्यावली

आयु कर्म के ४ भेद

(जोगीरासा)

चार तरह के नरकों वाले, काले-काले काले।
रहे कष्ट दुख रोग वेदना, बहु तड़पाने वाले॥
दुख दाता इस नरक आयु का, कर्म दहन कर पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं नर्क-आयुकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

वध बंधन ताड़न पीसन के, जहाँ महा दुख पाएँ।
छेद भेद की भूख प्यास की, जहाँ वेदना पाएँ॥
ऐसी इस तिर्यंच आयु का, कर्म दहन कर पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच-आयुकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

गर्भों के वा जन्म मरण के, और बुढ़ापे वाले।
योग वियोगों आधि व्याधि के, औदारिक तन वाले॥
दुख मनुष्य पर्याय आयु का, कर्म दहन कर पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं मनुष्य-आयुकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

भोग विलास असंयम वाले, जीवन शांति न देते।
पश्चाताप उदासी वाले, रोग मानसिक देते॥

कष्ट देव पर्याय आयु का, कर्म दहन कर पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥
ॐ ह्रीं देव-आयुकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

आयु नरक तिर्यंच मनुज वा,देव आयु का हरण करें
जेल खेल के कर्मों के हर के, सिद्ध दशा हम ग्रहण करें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥
ॐ ह्रीं सकल आयुकर्म कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

षष्ठम वलय अर्घ्यावली

नाम कर्म के ९३ भेद

(हाकलिका)

नाम कर्म गति नर्क हरें, पंचम गति निर्वाण गहें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं नरकगति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥
नाम कर्म तिर्यंच हरें, पंचम गति निर्वाण गहें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं देवगति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥
नाम कर्म गति मनुज हरें, पंचम गति निर्वाण गहें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं मनुष्य गति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥
नाम कर्म गति देव हरें, पंचम गति निर्वाण गहें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं देवगति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

एकेन्द्रिय के कर्म हरें, बनें अतीन्द्रिय मोक्ष वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं पृथ्वी आदिक एकेन्द्रियजाति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

दो इन्द्रिय के कर्म हरें, बनें अतीन्द्रिय मोक्ष वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं शंख आदिक द्वीन्द्रियजाति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

त्रय इन्द्रिय के कर्म हरें, बनें अतीन्द्रिय मोक्ष वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं चींटी आदिक त्रीन्द्रियजाति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

चतुः इन्द्रिय के कर्म हरें, बनें अतीन्द्रिय मोक्ष वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं भ्रमर आदिक चतुरिन्द्रियजाति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

पंचेन्द्रिय के कर्म हरें, बनें अतीन्द्रिय मोक्ष वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं मनुष्य आदिक पंचेन्द्रियजाति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

औदारिक तन कर्म हरें, देहातीत विदेह वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

वैक्रियिक तन कर्म हरें, देहातीत विदेह वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिक शरीर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥

आहारक तन कर्म हरें, देहातीत विदेह वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

तैजस तन के कर्म हरें, देहातीत विदेह वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं तैजस शरीर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

कार्मण तन के कर्म हरें, देहातीत विदेह वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं कार्मण शरीर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

औदारिक के अंगोपांग, कर्म हरें बनने सिद्धांग।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर अंगोपांग नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

वैक्रियिक के अंगोपांग, कर्म हरें बनने सिद्धांग।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिक शरीर अंगोपांग नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

आहारक के अंगोपांग, कर्म हरें बनने सिद्धांग।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर अंगोपांग नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥

हरें तीन तन के निर्माण, सिद्धों सा पाएँ निर्वाण।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं निर्माण नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६६॥

औदारिक बंधन हर लें, बंधन मुक्त तत्त्व वर लें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं औदारिक बंधन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥

वैक्रियिक बंधन हर लें, बंधन मुक्त दशा वर लें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं वैक्रियिक बंधन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥

आहारक बंधन हर लें, बंधन मुक्त खोज वर लें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं आहारक बंधन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥

तैजस बंधन हर लें, बंधन मुक्त मोक्ष वर लें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं तैजस बंधन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥

कार्मण बंधन हर लें, बंधन मुक्त आत्म वर लें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कार्मण बंधन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥

औदारिक संघात हरें, छेद भेद सब दूर करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं औदारिक संघात नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

वैक्रियिक संघात हरें, खेद भेद सब दूर करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं वैक्रियिक संघात नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७३॥

आहारक संघात हरें, घात मात सब दूर करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं आहारक संघात नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥

तैजस तन संघात हरें, तीर बाण सब दूर करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं तैजस संघात नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥

कार्मण तन संघात हरें, काम धाम सब दूर करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कार्मण संघात नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥

समचतुरस्रसंस्थान हरें, आतम का कल्याण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं समचतुरस्त्र संस्थान नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥

न्यग्रोधतनसंस्थान हरें, हम अपना कल्याण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥

देह स्वातिसंस्थान हरें, काया से कल्याण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं स्वाति संस्थान नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥

तन कुब्जकसंस्थान हरें, कंचन सा कल्याण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कुब्जक संस्थान नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८०॥

तन वामनसंस्थान हरें, वीतराग कल्याण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं वामन संस्थान नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

तन हुंडकसंस्थान हरें, बस केवल कल्याण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं हुंडक संस्थान नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

वज्रवृषभसंहनन हरना, वीतराग उज्ज्वल करना।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं वज्रवृषभसंहनन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

हरें वज्रनाराचसंहनन, महके वीतराग उपवन।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहनन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

संहनन बल नाराच हरें, करें साधना साध्य वरें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं नाराचसंहनन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

संहनन हरें अर्द्धनाराच, आत्म प्रदेशों में हो नाँच।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसंहनन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

कीलकसंहनन हरना है, केवलज्ञानी बनना है।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कीलकसंहनन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८७॥

अंतिम संहनन हरना है, आत्मा विशुद्ध करना है।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं नाराचसंहनन नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

कोमल सा स्पर्श हरें, शुद्धात्मा का दर्श करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कोमलस्पर्श नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

कठोर सा स्पर्श हरें, परमात्मा का दर्श करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कठोरस्पर्श नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

हल्का सा स्पर्श हरें, सिद्धात्मा का दर्श करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं हल्कास्पर्श नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

भारी सा स्पर्श हरें, निज आत्मा का दर्श करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं भारीस्पर्श नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

शीतल सा स्पर्श हरें, मुक्तिवधू का दर्श करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं शीतस्पर्श नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

ऊष्णम् सा स्पर्श हरें, लोक शिखर का दर्श करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं ऊष्णस्पर्श नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९४॥

चिकना सा स्पर्श हरें, चिदानंद का दर्श करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं चिकनास्पर्श नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

रूखा सा स्पर्श हरें, परमानंदी दर्श करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं रूखास्पर्श नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

खट्टा रस का स्वाद हरें, कर्म मुक्त चैतन्य करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं तिक्तस्वाद नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

मीठा रस का स्वाद हरें, कंचन सा चैतन्य करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं मधुरस्वाद नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥

जीभ स्वाद चरपरा हरें, भ्रमण मुक्त चैतन्य करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं चरपरास्वाद नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

कडवे रस का स्वाद हरें, वीतराग चैतन्य करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कटुकस्वाद नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥

कसायला रस स्वाद हरें, मोह मुक्त चैतन्य करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कसायलास्वाद नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०१॥

सुगंध वाली गंध हरें, हम भी परमानंद करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं सुगंध नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥

दुख दायक दुर्गंध हरें, हम भी धर्मानंद करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं दुर्गंध नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥

शुक्ल रंग का वर्ण हरें, मुक्तिवधू का वरण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं शुक्लवर्ण नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥

कृष्ण रंग का वर्ण हरें, निज रमणी का वरण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं कृष्णवर्ण नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

नील रंग का वर्ण हरें, मुक्तिरमा का वरण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं नीलवर्ण नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

लाल रंग का वर्ण हरें, मोक्ष सुन्दरी वरण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं रक्तवर्ण नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

पीत रंग का वर्ण हरें, मुक्ति स्वयंवर वरण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं पीतवर्ण नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०८॥

नरकगति-अनुपूर्व्य हरें, अपना जीवन धन्य करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्व्य नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०९॥

तिर्यक्गति-अनुपूर्व्य हरें, तीर्थंकर सा जन्म करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं तिर्यक्गत्यानुपूर्व्य नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११०॥

मनुष्यगति-अनुपूर्व्य हरें, हम अपना कल्याण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्व्य नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१११॥

देवगति-अनुपूर्व्य हरें, दिव्य देशना ग्रहण करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्व्य नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११२॥

अगुरुलघु का कर्म हरें, मोक्षमार्ग स्वीकार करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं अगुरुलघु नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११३॥

निजघाती उपघात हरें, दया धर्म स्वीकार करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं उपघात नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११४॥

परघाती परघात हरें, आत्म धर्म स्वीकार करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं परघात नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११५॥

आतप दाता कर्म हरें, शुद्ध धर्म स्वीकार करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं आतप नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११६॥

परवशता उद्योत हरें, परम धर्म स्वीकार करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं उद्योत नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११७॥

श्वास-श्वास उच्छ्वास हरें, धर्म प्राण स्वीकार करें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं उच्छ्वास नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११८॥

तजें प्रशस्तविहायगति, जल्दी पाएँ मोक्ष गति।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायगति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११९॥

तजें अप्रशस्तविहायगति, जल्दी पाएँ सिद्ध गति।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं अप्रशस्तविहायगति नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२०॥

हम प्रत्येक शरीर तजें, देहातीत विदेह भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं प्रत्येक शरीर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२१॥

हम साधारण काय तजें, ज्ञान शरीरी सिद्ध भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं साधारण शरीर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२२॥

त्रस नामक पर्याय तजें, तीर्थंकर बन सिद्ध भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं त्रस नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२३॥

स्थावर पर्याय तजें, सिद्धों के दरबार सजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं स्थावर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२४॥

सुभग नाम का कर्म तजें, चेतन के दरबार सजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं सुभग नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२५॥

दुर्भग नामक कर्म तजें, सुंदर निज चैतन्य सजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं दुर्भग नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२६॥

कोयल सा सुस्वर त्यागें, रहें मौन निज में जागें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं सुस्वर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२७॥

कौआ सा दुस्वर त्यागें, मौन ग्रहण से ना भागें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं दुस्वर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२८॥

मंगलकारी शुभ त्यागें, विघ्न अमंगल से जागें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं शुभ नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२९॥

संकट दायक अशुभ तजें, अतिशयकारी मंत्र भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं अशुभ नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३०॥

लघुता दायक सूक्ष्म तजें, गुण स्थानातीत भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्म नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३१॥

बादर वाले धाम तजें, वीतराग सर्वज्ञ भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं बादर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३२॥

पर्याप्ति पर्याप्त तजें, हितोपदेशी आप्त भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं पर्याप्त नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३३॥

अपर्याप्त का खेद तजें, समता से हम प्राप्त भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं अपर्याप्त नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३४॥

स्थिर नामक कर्म तजें, स्थिरता को मोक्ष भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं स्थिर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३५॥

अस्थिर नामक भाव तजें, स्थिरता निर्दोष भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं अस्थिर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३६॥

लोकमान्य आदेय तजें, सिद्ध स्वरूपी गेह भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं आदेय नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३७॥

अनादेय के शूल तजें, चिदानंद अनुकूल भजें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं अनादेय नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३८॥

जगत प्रसिद्धी यश त्यागें, पृष्ठ यशस्वी के भागें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं यश नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१३९॥

जग अपमान अयश त्यागें, धर्म प्रतिष्ठा को भागें।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं अयश नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४०॥

लोक पूज्य तज तीर्थंकर, बनें सिद्ध सम शिवशंकर।
सिद्धप्रभु को करें नमन, कर नमोऽस्तु हो कर्म दहन॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकर नामकर्म-दहनाय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४१॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

नाम कर्म की पूर्ण प्रकृतियाँ, तिरानवें का हरण करें।
जेल खेल के कर्मों के हर के, सिद्ध दशा हम ग्रहण करें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥
ॐ ह्रीं सकल नाम कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

सप्तम वलय अर्घ्यावली

गोत्र कर्म के २ भेद

(शुद्ध गीता)

जहाँ मुनियों की दीक्षा हो, महाव्रत भी जहाँ पलते।
जहाँ मुनियों की सेवा हो, अणुव्रत भी जहाँ पलते॥
यही तो गोत्र ऊँचा है, करम इसका दहन करना।
प्रथम श्री सिद्ध पूजा कर , नमोऽस्तु कर नमन करना॥
ॐ ह्रीं उच्चगोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४२॥

जहाँ ना त्याग व्रत दीक्षा, जहाँ संकल्प ना होते।
जहाँ ना धर्म की चर्चा, जहाँ चारित्र ना होते॥

यही तो गोत्र नीचा है, करम इसका दहन करना।
प्रथम श्री सिद्ध पूजा कर , नमोऽस्तु कर नमन करना॥

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४३॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

उच्च-नीच दोनों गोत्रों के, हम भी बंधन हरण करें।
जेल खेल के कर्मों के हर के, सिद्ध दशा हम ग्रहण करें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं सकल गोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अष्टम वलय अर्घ्यावली

अंतराय कर्म के ५ भेद

(हरिगीतिका)

जो सात क्षेत्रों के जिनागम, दान के उपदेश दे।
सो विघ्न उनमें डालना ही, संकटों के देश दे॥
यह दान का अंतराय वाला, कर्म हम कर लें दहन।
श्री सिद्धस्वामी को नमोऽस्तु, कर मिले सिद्धात्मन्॥

ॐ ह्रीं दानांतराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४४॥

जो लाभ सम्यक् द्रव्य के हैं, साधना जो साध्य दे।
सो विघ्न उनमें डालना ही, रोग कष्ट असाध्य दे॥
यह लाभ का अंतराय वाला, कर्म हम कर लें दहन।
श्री सिद्धस्वामी को नमोऽस्तु, कर मिले सिद्धात्मन्॥

ॐ ह्रीं लाभांतराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४५॥

जो पंच इंद्रिय के बिषय, इक बार भोगे भोग वो।
सो विघ्न उनमें डालना, संसार का संयोग॥

यह भोग का अंतराय वाला, कर्म हम कर लें दहन।
श्री सिद्धस्वामी को नमोऽस्तु, कर मिले सिद्धात्मन्॥
ॐ ह्रीं भोगांतराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...१४६॥

जो भोग लें बहुबार हम, उपभोग उसको ही कहा।
सो विघ्न उनमें डालना ही, वेदना का पथ रहा॥
उपभोग का अंतराय वाला, कर्म हम कर लें दहन।
श्री सिद्धस्वामी को नमोऽस्तु, कर मिले सिद्धात्मन्॥
ॐ ह्रीं उपभोगांतराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४७॥

चारित्र पालन शक्ति से हो, शक्ति से व्रत पालना।
सो विघ्न उनमें डालना ही, पाप में निज ढालना॥
यह वीर्य का अंतराय वाला, कर्म हम कर लें दहन।
श्री सिद्धस्वामी को नमोऽस्तु, कर मिले सिद्धात्मन्॥
ॐ ह्रीं वीर्यांतराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१४८॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

दान लाभ उपभोग भोग वा, अंतराय हम वीर्य हरें।
जेल खेल कर्मों के हर के, सिद्ध दशा हम ग्रहण करें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥
ॐ ह्रीं सकल अंतराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

ज्ञान दर्श वा वेद मोह वा, आयु नाम वा गोत्र हरें।
अंतराय ये अष्ट और कुल, इक सौ अड़तालीस हरें॥
यही भावना हम भक्तों की, मोक्षमहल के सुख पाएँ।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाएँ॥

(दोहा)

अष्ट कर्म को नष्ट कर, सिद्ध अष्ट गुण पाएँ।
सुव्रत विद्या प्राप्ति को, कर नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं सकल अष्टकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः समुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

कर्म बड़े कमजोर हैं, कर्म बड़े बलवान।
कर्म रंक राजा करें, कर्म करें भगवान॥
जेल खेल सब कर्म के, दिखलाए संसार।
सो कर्मों को नष्ट कर, होगी नैया पार॥

(ज्ञानोदय)

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, नभ मंडल पाताल सभी।
भौतिक शास्त्र रसायन औषध, क्रियाकांड भूगोल सभी॥
स्वर्ग नरक या भूख प्यास सब, वेद ऋचाएँ शिक्षाएँ।
जन्म मरण या सभी कलाएँ, कलाकार सब विद्याएँ॥१॥
इस धरती से उस अंबर तक, जितना भी विस्तार दिखे।
पाप व्यसन या क्लेश कषाएँ, जितना जो संसार दिखे॥
अत्याचार मोह की माया, सुख-दुख पुण्य पाप छाया।
यह सब कर्मों की बलिहारी, ऐसा हमको बतलाया॥२॥
ऐसा ज्ञान मिला शास्त्रों से, गुरुओं ने उपदेश दिया।
दिव्य देशना यही सिखाती, धर्मों ने संदेश दिया॥
कर्मों के सिद्धांत अगर हम, भक्त जान लेंगे साँचे।
तो सिद्धों सम होंगे हम भी, दुनियाँ अपना यश वाँचे॥३॥
ज्ञान और दर्शन आवरणी, फिर तो साथ हमारा दें।

वेदनीय वा मोहनीय भी, फिर तो अपना क्या कर लें॥
आयु नाम वा गोत्र कर्म वा, अंतराय ये आठों कर्म।
हम भी शीघ्र नष्ट कर लेंगे, पाएँगे निज आतम धर्म॥४॥
फिर संसार भ्रमण ना होगा, मोक्ष मिलेगा सिद्धों सा।
सिद्धालय के सुख भोगेंगे, धर्म मिलेगा सिद्धों सा॥
मुक्तिवधू से विवाह होगा, और स्वयंवर वरमाला।
निज रमणी के साथ रमेंगे, सार्थक होगी जयमाला॥५॥
यह सपना साकार करें हम, कर्म दहन सो किया विधान।
सिद्धप्रभु की किए अर्चना, भजे मूलनायक भगवान॥
त्याग तपस्या ज्ञान ध्यान सब, यथाशक्ति हम करते हैं।
शास्त्रों के अनुसार क्रियाएँ, यम संयम सब धरते हैं॥६॥
सुव्रत की बस यही भावना, कर्मों का पीछा छूटे।
कर्मों का हर बंधन टूटे, दुनियाँ रूठे तो रूठे॥
ऐसी विद्या प्राप्त करें बस, ऋद्धि-सिद्धि हो आतम की।
अष्ट कर्म को नष्ट करें हम, छाँव मिले परमातम की॥७॥

(दोहा)

कर्म कथाएँ त्यागने, कर्म किए कुछ आज।
पाप कर्म सब त्याग कर, पूजे श्री जिनराज॥
रिश्ते-नाते कर्म के, त्यागें सब संसार।
करें सिद्ध भगवान को, नमोऽस्तु बारंबार॥

ॐ ह्रीं सकल अष्टकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अनन्त सिद्ध स्वामी करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्त सिद्ध जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

स्वर्ण जन्म दीक्षा रजत, का यह पावन वर्ष।
बीना नगरी में हुआ, दीक्षा दिवस सहर्ष॥
समोसरण पच्चीस के, गणधर मंत्र महान।
सिद्धप्रभु की अर्चना, करके किया विधान॥
बैसाखी शुचि सप्तमी, दो हजार तेबीस।
विद्या के सुव्रत रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

===

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्यखण्डे-भारतदेशे-मध्यप्रदेशे-.....जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥

तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥

मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः/(जः जः जः)।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

❑ ❑ ❑

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
१. सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं। पुनः...॥
२. दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं। पुनः...॥
३. यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं। पुनः...॥

❑ ❑ ❑